Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी गजल का स्वरूप-विश्लेषण

Bhuvnesh Kumar Parihar[1]* Dr. Shama Khan[2]

[1] Assistant Acharya (Hindi), Government College, Sambhalek, Jaipur

[2] Assistant Teacher, Hindi, Government Girl's College, Ajmer

सार – *हिन्दी गजल के व्यापक प्रसार के साथ जो सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि हमें दिखलाई पड़ती है वह बौद्धिकता के नीरस बियाबान में खोई हुई कविता कामिनी नये सजधज और नये सौन्दर्य के साथ प्रेमी मानव-समाज में लौटने लगी है। हिन्दी गजल के माध्यम से हिन्दी कविता की भिन्न-भिन्न शैली वाली भीड़भाड़ में खो गयी गीत एवं संगीतपूर्ण शैली वाली कविता पुनः वापस आ रहीं है। निस्संदेह रूप से लौटती हुई यह रूपसी अपनी गेयता, चुभन और मोहक आवरण के कारण सहृदय को अपनी ओर आकृष्ट कर रही है और काव्यास्वाद वाले रसों का परिपाक कराती हुई ये बाद छन्द एवं गीत युग में हिन्दी प्रेमियों को ले जाकर भावविभोर कर रही है। सम्प्रति इसका प्रचार एवं प्रसार समकालीन हिन्दी काव्य-धारा की सभी दिशाओं में हो रहा है। इसके स्वरूप और कथ्य में नवीनता, प्रखरता एवं विविधता का समावेश हुआ है। अब तक इसने किसी वर्ग सीमा, अथवा भाषा की सीमा को पार करके व्यापक क्षेत्र तक अपना विकास किया है। सभी भाषाओं एवं सभी वर्गों के लोगों ने इस विधा के प्रति रुचि दिखाई है। आम जीवन से इसको जुड़ाव इस विधा की विशिष्ट उपलब्धि है। मानव संवेदनाओं एवं चेतना को जागृति करने में हिन्दी गजल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मानवतावादी चिन्तन को इस विधा में विशिष्ट स्थान मिला है।*

----------X----------

परिचय

हिन्दी साहित्य में गजल को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह हिन्दी साहित्य की एक सशक्त और अत्यन्त लोकप्रिय काव्य-विधा है। हिन्दी साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हिन्दी काव्य में अनेक आन्दोलन एवं वाद आये और चले गये। नयी कविता, अकविता, विचार कविता आदि आदोलन एक समय से हिन्दी काव्याकाश पर छाये रहे हैं। किन्तु यह समस्त आन्दोलन लयहीनता, अतिबौद्धिकता एवं व्यापक उद्देश्यों के अभाव के कारण जनमानस पर अपना शाश्वत प्रभाव स्थापित नहीं कर सके। गीतात्मक काव्य में आज नवगीत के अतिरिक्त केवल गजल ही एक विशिष्ट तेवर के साथ हिन्दी में प्रचलित है। इसकी शुरुआत लगभग पन्द्रह सौ वर्ष पहले अरबी भाषा में हुई थी। अरबी में गजल कोई स्वतन्त्र काव्य-विधा नहीं थी। वहाँ मुख्य रूप से कसीदे (राजाओं की प्रशंसा में लिखे जाने वाले काव्य) और रजज (वीर रस के काव्य) लिखे जाते थे। कसीदे में शायर अपने प्रशंसात्मक शेरों के बीच में कुछ शेर ऐसे भी डाल देते थे जो प्रशंसा के विषय से हटकर प्रेम, सौन्दर्य, शराब, बहार आदि से सम्बन्धित होते थे। इसे अरबी में क्रसीदा की 'तश्बीब (एकबन्द) या नसीब कहते हैं। इसमें मुख्य रूप से इश्क-मोहब्बत का जिक्र होता था। आगे चलकर फारसी के शायरों ने जब अरबी विधा को अपनाया तो तश्बीब के अशआर को अलग करके एक दूसरी विधा बनाई जिसे गजल कहने लगे। कुछ विद्वानों की मान्यता यह है कि फारसी से यह विधा उर्दू में आई और उर्दू से हिन्दी में, जबकि अधिकांश विद्वानों की मान्यता यह है कि हिन्दी गजल उर्दू से न आकर सीधे फारसी से हिन्दी में आई और उर्दू के जन्म (मुगलकाल 2015से 2017) से पहले अमीर खुसरों ने हिन्दी में पहली गजल लिखी। तथ्यों और तर्को की कसौटी पर दूसरी मान्यता ठीक लगती है।

आयातित विधा होने के कारण हिन्दी गजल उर्दू गजल के कथ्य एवं शिल्प से प्रभावित तो है किन्तु इसने अपने कथ्य-कौशल में निश्चय ही परिष्कार किया है और उर्दू गजल की औपचारिकता की अपेक्षा अत्यधिक अनौपचारिक हो गई है। निस्संदेह हिन्दी गजल ने काव्य को नयी भावभूमि एवं नवीन तेवर प्रदान किये हैं और वह दरबारों से निकलकर जनमानस का कंठहार बन गई है। जहाँ तक गजल शब्द के अर्थ और परिभाषा गजल का स्वरूप विश्लेषण का प्रश्न है इस पर विद्वानों के विविधमत हैं। अधिकांश विद्वानों की राय में

www.ignited.in

गजल शब्द का अर्थ है- श्प्रेमिका से बातें करना । यहाँ हम विभिन्न विद्वानों के मतों पर दृष्टि पात करते हैं।

गजल शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में कुछ लोगों का मत है कि यह अरबी भाषा का (स्त्रीलिंग) शब्द है जिसका अर्थ है- 'प्रेमी और प्रेमिका की बातचीत । कुछ विद्वान गजल की उत्पत्ति गजाला (अरबी) से मानते हैं जिसका अर्थ होता है- 'मृग या हिरन' द्य कुछ लोग गुजाला का अर्थ मृगनयनी बताते हैं जिसका अर्थ यह हो सकता है कि मृग के समान सुन्दर नेत्रों वाली सुन्दरियों के सन्दर्भ में लिखी गयी प्रेम कविताएँ गजल कही जाती है। डॉ० ख्वाजा अहमद फारूकी गुजाला शब्द का अर्थ हिरन बताते हुए कहते हैं। कि 'गजल का एक अर्थ उस कराह से भी है, जो गजाला (हिरन) तीर चुभने के बाद बेकसी के आलम में निकालता है। इसी कारण गुजल में एक अजीब सी कसक बेदना और टीस रहती है, जिसमें दुनिया की बेवफाई का जिक्र रहता है।

गजल की व्युत्पत्ति के सन्दर्भ में कुछ के मतानुसार अरब में गजल नामक एक कवि था जिसने अपनी सारी आयु प्रेम एवं मस्ती में ही बिता दी। उसकी कविताओं का वर्ण्य विषय सदैव प्रेम ही हुआ करता था। अतः कालान्तर में इस गजल नामक कवि के नाम पर इस प्रकार की प्रेम परक कविताओं को गजल की संज्ञा दी गई।

इस प्रकार गजल के शाब्दिक अर्थ एवं व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि गजल शब्द अरबी भाषा का ही है जो प्रेमी और प्रेमिका के वार्तालाप के अर्थ में प्रयोग किया जाता रहा है। धीरे-धीरे गजल प्रेम की संकीर्ण परिधि से बहार निकलकर प्रेम के व्यापक रूप में प्रयोग की जानी लगी। दरबारी संस्कृति एवं सभ्यता के प्रभाव में आकर गजल, जो वासनात्मक प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुकी थी, परवर्ती कवियों ने उसे व्यापक आयाम प्रदान किया और गजल के अन्तर्गत प्रेमिका की कंघी, चोटी, अंगिया, कुर्ती के वर्णन के स्थान पर पवित्र प्रेम यथा पारिवारिक प्रेम, ईश्वर प्रेम, देश-प्रेम आदि भावनाओं की अभिव्यंजना होने लगी। इस प्रकार गजल अपने संकुचित शाब्दिक अर्थ से हटकर व्यापक स्वरूप में कवियों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी।

श्री मुहम्मद मुस्तफा खाँ मदाह द्वारा स्थापित 'उर्दू हिन्दी शब्द-कोश में गजल अर्थ दिया गया है-- 'प्रेमिका से वार्तालाप, उर्दू-फारसी कविता का एक प्रकार विरोध जिसे

गजल का स्वरूप विश्लेषण प्रायः 5 से 11 शेर होते हैं। सारे शेर एक ही रदीफ और काफिये में होते हैं। फारसी में गजल का शाब्दिक अर्थ है- औरतों से बातें करना । हिन्दी साहित्य कोश में गजल का अर्थ नारियों से प्रेम की बातें करना ही मिलता है। मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली के अनुसार- 'जहाँ तक गजलों की मूल प्रकृति का सम्बन्ध है, उसका विषय प्रेम के अतिरिक्त कुछ और नहीं । फिराक गोरखपुरी के अनुसार गजल असम्बद्ध कविता है। गजल का मिजाज मूलतः समर्पणवादी होता है। प्रोफेसर कलीमुद्दीन अहमद ने गजल को नीम बहशी सिन्फे-सुखन कहा है। वह लिखते हैं- हुस्ने सूरत जो नज्म, अफसाना, ड्रामा बगैरह की लाजमी सिन्फी खुसूसियत है, गजल में मौजूद नहीं गजल के हर शेर में किसी मख सूस जज्बा या ख्याल का इजहार मद्देनजर होता है। सारे एसहसासात व तसब्बरात मोस्तव व मोक्कब होकर एक नक्शे कामिल की शक्ल में जल्वागार नहीं होते, यही नमीवहशी होने की दलील है। गजल की व्युपति विषयक धारणा को लेकर प्रायः गजल मर्मज्ञों में थोड़ा बहुत मतान्तर रहा है, किन्तु वे सभी इस बात से सहमत हैं कि गजल प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त एवं प्रभावोत्पादक माध्यम है। अनेक विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से गजल को परिभाषित किया है।

हिन्दी गजल को परिभाषित करते हुए डॉ0 कुँअर बेचैन लिखते हैं कि गजल रेगिस्तान के प्यासे होंठों पर उतरती हुई शीतल तरंग की उमंग है। गजल घने अंधकार में टहलती हुई चिंगारी है। गजल नींद से पहले का सपना है। गजल जागरण के बाद का उल्लास है। गजल गुलाबी पाँखुरी के मंच पर बैठी हुई खुशबू का मौन स्पर्श है।।

गोपाल दास नीरज के अनुसार गजल न तो प्रकृति की कविता है न अध्यात्म की, वह हमारे उसी जीवन की कविता है, जिसे हम सचमुच जीते हैं।....

यदि शुद्ध हिन्दी में गजल का स्वरूप विश्लेषण गजल लिखनी ही है तो हमें हिन्दी का वह स्वरूप तैयार करना होगा जो दैनिक जीवन की भाषा और कविता की भाषा की दूरी को मिटा सके ।

हिन्दी गजल के अन्य सशक्त हस्ताक्षर डॉ० उर्मिलेश के मतानुसार- हिन्दी गजल से मेरा अभिप्राय उर्दू कविता से आयातित उस काव्य-विधा से है जो उर्दू गजल की शैल्पिक काया में हिन्दी की आत्मा को प्रतिष्ठित करती हुई अपनी गेयता को सुरक्षा देती हुई, आधुनिक जीवन और परिवेश की संगतियों और विसंगतियों को नूतन भावबोध के साथ स्थापित करती हुई आगे बढ़ रही है। जिस गजल में हिन्दी की प्रकृति और व्याकरण की सुरक्षा के साथ नवागत बिम्बों और प्रतीकों का विधान है, मेरी समझ में उसे हिन्दी गजल मान

www.ignited.in

लेने में कोई हर्ज नहीं है। उर्दू के कवियों ने जिस तरह अपने काव्य में हिन्दी गीत को आत्मसात कर लिया है, वैसे ही हिन्दी कवि यदि गजल को अपनी तरह आत्मसात कर लें तो साहित्यिक साम्प्रदायिकता का मूलोच्छेद बहुत जल्दी हो जायेगा।

हिन्दी साहित्य के विद्वानों, अध्येताओं और रचनाकारों ने भी समय-समय पर गजल के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। प्रसिद्ध कवि पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने गजल का अर्थ जवानी का हाल बयान करना या माशूक की संगति और इश्क का जिक्र करना बताते हुए लिखा है कि एक गजल में प्रेम के भिन्न-भिन्न भावों के शेर लाने का नियम रखा गया है। किसी शेर में आशिक अपनी मनोवेदना प्रकट करता है, जिसमें माशूक पर उसका कुछ प्रभाव पड़े। किसी शेर में वह माशूक की प्रशंसा करता है जिससे वो प्रसन्न हो किसी शेर में वो माशूक की वफा और जफा का जिक्र करता है और किसी में रकीब की शिकायत करता है। मतलब यह कि जिस बात के कहने से माशूक के प्रसन्न होने या और कोई खास नतीजा मिलने की आशा होती है वही बातें गजल में आती हैं।

स्व0 दुष्यन्त कुमार की मान्यता है कि गजलों की भूमिका की जरूरत नहीं होनी चाहिए उर्दू और हिन्दी अपने-अपने सिंहासन से उतरकर जब आम आदमी के पास आती है तो उसमें फर्क कर पाना बड़ा मुश्किल होता है।

अब्दुल विस्मिल्लाह के अनुसार यह गजल का स्वरूप विश्लेषण सर्वविदित है कि गजल अब अपने शाब्दिक अर्थ से बाहर आ गई है और यह एक ऐसी काव्य विधा बन गई है जिसमें जीवन के विविध पहलुओं की अभिव्यक्ति हो रही है।

गजल की काव्यगत विशेषताओं को रेखांकित करते हुए श्री देवेन्द्र शर्मा इन्द्र ने लिखा है कि 'गजल का कथ्य अब अपेक्षाकृत बहुत विस्तृत हो चुका है। सामन्ती मनोरंजन करने वाली उत्तेजक सामग्री के स्थान पर अब उसमें आम आदमी को दुख-दर्द का अभाव ग्रस्तादृजिदगी के तनावों का, भीड़ में खोई हुई व्यक्ति की अस्मिता का, मानवीय मूल्यों के विघटन का, सामाजिक अव्यवस्था, शोषण और आतंक का उपजीव्य सामग्री के रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है।"

हिन्दी गजल को साहित्यिक परिभाषा प्रदान करते हुए समय की आक्रोशी भंगिमाओं को इस पुरातन विधा में नवता के समग्र सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त करने वाले गजलकार शिव ओम अम्बर लिखते हैं कि समसामयिक हिन्दी गजल भाषा के भोजपत्र पर लिखी हुई विप्लव की अग्निऋचा है, गुलाब की पंखुड़ी पर क्रान्ति की कारिका लिपिबद्ध करने का संकल्प है।

शमशेर बहादुर सिंह के अनुसार गजल एक लिरिक विधा है जिसकी कुछ अपनी शर्तें हैं। अपना प्रतीकवाद और जीवंत परंपरा है। श्री माजदा असद का कहना है कि 'साहित्य और समाज में गजल का वही स्थान है जो किसी भरे-पूरे घर में एक अलबेली सुन्दरी का होता है। उसके चाहने वालों में बड़े-बूढ़े, औरत-मर्द, सूफी, योग्य और अयोग्य, ज्ञानी और अज्ञानी सभी होते हैं। कुछ उसके अल्हड़पन के दिलदार है तो कुछ उसकी शोखियों पर मरते हैं, कुछ उसकी गंभीरता, धीरता और रख-रखाव पर आसक्त हैं तो कुछ उसके हाव-भाव और चालदृचोंचले पर नाक-भौं चढ़ाते हैं।

ज्ञानेन्द्र ने गजल की विशेषताएं बताते हुए उसकी परिभाषा इस प्रकार दी है गजल एक छान्दिक विधा है। छान्दिक रचनाएँ अन्य किसी भी विधा की रचनाओं में गजल का स्वरूप विश्लेषण अधिक प्रभावकारी होती है। जब तक समकालीन कविता में छान्दिक प्रभाव रहा बहुत गहरे तक स्वीकृत हुई । हिन्दी गजल की समकालीन साहित्यिक विधा के रूप में सामने आई जो जन सामान्य की पीड़ा के साथ समकालीन कथ्य को बहुत ही सहजता के साथ, छन्द में कथ्य की वैविध्यता को अभिव्यक्त कर रही है। आज यह वर्तमान के पदचाप के साथ भावात्मक सौन्दर्य को बड़ी खूबसूरती से परोस रही है।..... हिन्दी गजल अर्थात वैसी गजल जिसमें हिन्दी शब्दों का प्रयोग और हिन्दी व्याकरण शैली का निर्वाह हुआ है। डॉ0 किशन तिवारी के अनुसार गजल अब राजदरबारों या कोठों के मुजरों से उतरकर आम आदमी के आटे-दाल की चिन्ता से चिन्तित है। समकालीन हिन्दी गजल ने तमाम उन पहलुओं को छुआ है जो वर्षों से अछूते रहे थे।

गजल में भाषा का सौन्दर्य, ताजा मक्खन की कोमलता एवं महक, केशर का रंग एवं सुगंध तथा प्रेम का सम्पूर्ण रोमांच विद्यमान है। नवीनतम् विषयों का निचोड़ है। आकाश का छोर ढूंढने की ललक है। शब्दों में निहित स्वाद तथा लावण्य का अनूठा सुमेल है। शकुन्तला के हृदय के भोजपत्र पर कालिदास की तूलिका से दुष्यन्त द्वारा लिखा गया प्रणय-निवेदन है। मानव मन को अभिप्रेरित करने वाले शब्दों का सविस्तार कोष है जिसमें भाषा की रंगीन उँगली का सुकोमल स्पर्श तथा सूक्ष्म समालोचना इसमें शब्दार्थों का व्यापकता, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का सुंघरू बजाता हुआ जल-प्रपात कवयित्री मधुरिमा सिंह ने गुजल को परिभाषित करते हुए लिखा है कि अपनी हथेली पर झिलमिलाती आँसू की बूंद को उसकी तरलता और पारदर्शिता को छुए बिना, दूसरे की हथेली पर सावधानी से रख देने का दूसरा नाम गजल है। गजल जिन्दगी की पलकों पर थरथराती हुई आंसू की बूंदें हैं, जो सूरज की रोशनी अपने अन्दर समोकर सतरंगी आभा से

www.ignited.in

आलोकित हो जाती है। गजल धूप की नदी में पाँव छपछपाती हुई चाँदनी है।

गजल का स्वरूप विश्लेषण डॉ0 नरेन्द्र वशिष्ठ का मत है कि गजल का मूल क्षेत्र नारी विषयक भावों से सम्बन्धित है। दरअसल गजल गोई का अधिकार सम्बन्ध विरह जन्य व्यथा से रहा है। अतः इसमें हृदय को छू लेने की क्षमता को बहुत ऊँचा गुण माना गया है।

इस प्रकार हिन्दी गजल के सन्दर्भ में उपलब्ध परिभाषाएं अपने-अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है जिनका समग्र रूप से अध्यय करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। कि हिन्दी गजल उर्दू-फारसी से अयातित वह काव्य-विधा है जो पूर्व निर्धारित लघुखण्डों में आबद्ध अनेक शेरों के माध्यम से प्रतीकों एवं बिम्बों के सहारे पढ़े-लिखे आम आदमी की भाषा में आधुनिक जीवन मूल्यों की प्रतिस्थापना में सहायक सिद्ध हुई है। अनुभूति की तीव्रता एवं संगीतात्मकता हिन्दी गजल के प्राण हैं।

गजल शब्द की व्युत्पत्ति अरबी के गजल से हुई है। कुछ लोग इसे अरब में रहने वाले गजल नाम के व्यक्ति से भी जोड़ते हैं। इसका शाब्दिक अर्थ होता है- हिरन या मृग । गजल प्रारम्भ में कोई स्वतन्त्र विधा नहीं थी। इसकी शुरूआत राजाओं की प्रशंसा या विरुदावली के रूप में गाये जाने वाले कसीदों की बीच-बीच में आने वाले तस्बीब या नसीब के शेरों जिसमें प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति, शराब और शबाब की बातें होती थीं। कुछ लोग इसका जन्म अरबी के कसीदा के कोस से न मानकर इरानी चामा से मानते हैं। गजल शब्द का अर्थ होता है- प्रेमी और प्रेमिका के बीच का वार्तालाप इसके शेर एक तरह से भिन्न-भिन्न काफिया (तुकान्त) और एक ही रदीफ से सुसज्जित एक ही वजन और एक ही बहर (छन्द) में लिखे गये होते हैं। इसका प्रत्येक शेर अपने आप में पूर्ण होता है। तथा स्वतंत्र अर्थ अभिव्यक्त करता है। गजल में न्युनतम तीन शेर और अधिकतम पच्चीस शेर हो सकते हैं। इन सबके संतुलित संगठन और समुचित निर्वाह से ही गजल अपनी आकारगत् पूर्णता को प्राप्त करती है, प्रेम, सौन्दर्य, सुक्तिभयता, साकेतिकता संक्षिप्तता, संश्लिष्टता, प्रतीकात्मकता और संगीतात्मकता आदि गजल की अनिवार्य विशेषताएँ हैं।

आगे चलकर और विशेषकर हिन्दी में आकर परिवर्तित युग के साथ गजल का स्वभाव भी बदला। जो गजल एक समय में प्रेमिका से वार्तालाप और उसके सौन्दर्य की तारीफ जुड़ी थी तथा फूल की पंखुड़ी-सी नाजुक थी, वह सौन्दर्य बोध के साथ-साथ गजल का स्वरूप विश्लेषण युग-बोध की भी संवाहिका बन गयी। उसका रूप, रंग गुण सब कुछ बदल गया। द्य गजल अब प्रकृति, सौन्दर्य, प्रेम, मिलन और विरह के अलावा सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक धार्मिक, दार्शनिक, नैतिक और जीवन-जगत से जुड़े अनेक विषयों पर सार्थक विचार व्यक्त करने का सर्वाधिक कलात्मक, असरदार, कारगर, धारदार और पुरजोर अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में रूपान्तरित हो गई है। गजल आज जीवन के सम्पूर्ण सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, जय-पराजय, आशा-आकांक्षा, परिवर्तन और क्रान्तिकारी प्रगतिशील जनवादी चेतना को समर्थ और सशक्त रूप में व्यक्त कर रही है।

हिन्दी गजल एक सम्भावनाशील किन्तु सशक्त काव्यरूप है। कवि मानस की तीव्रानुभूति को कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए इससे उत्तम कोई अन्य माध्यम नहीं है। चूंकि हिन्दी गजल के लिए उर्दू-फारसी गजल ने उर्वर भावभूमि तैयार की। अतः हिन्दी गजल का स्वरूप उर्दू-फारसी गजल से मिलता-जुलता है। गजल का प्रत्येक शेर अपने आप में स्वतन्त्र एवं सम्पूर्ण होता है। इसके प्रत्येक शेर में एक नवीन विषय अथवा विचार अन्तर्निहित होता है। शेर की दो पंक्तियाँ जीवन की किसी वास्तविकता, किसी अनुभूति अथवा परिवेशगत यथार्थ की रूप रेखा को अपने में समाहित करने की सामर्थ्य रखती हैं।

गजलकारों को शेरों में शब्द-सौष्ठव का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। यदि एक भी शब्द हटाकर उसके स्थान। पर दूसरा शब्द प्रयोग कर दिया जाय तो सारा गुड़गोबर हो जाता है। हिन्दी गजल में इश्के मजाजी अथवा इश्के हकीकी की अपेक्षा इश्के इन्सानियत पर अधिक बल दिया गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी गजल में प्रेम एवं वासना जैसे परम्परागत गजल के तत्वों को नकारते हुए समाज, राजनीति, धर्म, शासन एवं सर्वहारा वर्ग की समस्याओं विसंगतियों तथा विद्रूपताओं का यथार्थ स्वरूप प्रतीकों एवं बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। द्य हिन्दी में लिखी जाने वाली गजलों में गजल के सम्पूर्ण रूपाकार शिल्प व्यवस्था और अभिव्यक्ति-भंगिमा को हू-ब-हू आत्मसात कर लेने के बावजूद कुछ गजलकारों ने गजल को नया नाम देने की कोशिश की गीतिका-नीरज, मुक्तिकाद्दचन्द्रसेन विराट, अनुगीत-मोहन अवस्थी, तेवरीद्दरमेशराज आदि। लेकिन गुजल के अधिकांश समर्थ रचनाकारों ने इन नामकरणों को नकारकर उसे गजल कहना ही उचित समझा।

गजल का स्वरूप विश्लेषण परम्परागत और उर्दू गजल की बहुत सारी बातों को स्वीकार करने के बाद भी हिन्दी गजल की कुछ अपनी निजता और पृथकता है। इसमें उर्दू की बहरों के साथ ही हिन्दी के छन्दों के आधार पर भी गजलें लिखी जा

www.ignited.in

रही है। उर्दू गजल की तीन से पच्चीस शेरों की शर्त भी हिन्दी में नहीं मानी जा रही है। कुछ गजलकारों ने एक गजल में सौकड़ों शेर तक कहे हैं। इसी प्रकार उर्दू गजल में प्रत्येक शेर अलग-अलग विषय से सम्बद्ध होते हैं, हिन्दी गजल में भी ऐसा होता है किन्तु बहुत सारी गजलें ऐसी भी लिखी जा रही हैं जिनमें सभी शेर एक ही केन्द्रीय विषय से सम्बद्ध हैं।

उर्दू और हिन्दी के विद्वानों, रचनाकारों की समस्त परिभाषाओं और गजलों में गजल की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। गजल की तमाम परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए डॉ० वशिष्ठ अनूप ने कहा है कि गजल को परिभाषित करना हो तो मैं यह कहना चाहूँगा कि गजल उर्दू हिन्दी शायरी की सबसे शसक्त और लोकप्रिय काव्य-विधा है। जो अपने जन्म के समय प्रेम और सौन्दर्य से वाबस्ता थी। वह अरबी और फारसी से होती हुई कई पीढ़ियों-बाद जब हिन्दी में पहुँची तो उसका रूप-रंग और नाक-नक्श काफी सीमा तक परिवर्तित हो चुका था। आज वह पूरी तरह भारतीय संस्कृति और साहित्य के रंग में रंगकर जमाने के साथ कदम मिलाकर चल रही है। इसकी दुनिया आज बहुत बड़ी हो चुकी है। गजल के दामन में आज हर रंग के फूल हैं और हर फूल की खुशबू है, मिट्टी की सोंधी गन्ध है, किन्तु इसमें जहरीले काँटे भी हैं, दहकते अंगारे भी हैं, जन जीवन की व्यथा-कथा और आँसू भी हैं। इसमें कृष्ण की वंशी की धुन मंद और शिव के डमरू का स्वर तीव्र है। इसमें काम के बाण विरल और राम के बाण अधिक हैं।

गजल की शिल्पगत या संरचनागत विशेषताओं में बहर (छंद) और वजन (मात्रा) के अलावा रदीफ (समान्त) और काफिया (तुकान्त) का विशेष महत्त्व होता है। इन सबके सन्तुलन में ही गजल को आकारगत पूर्णता प्राप्त होती है। गजल के पहले शेर की दोनों पंक्तियों के अन्त में तथा बाद के प्रत्येक शेर की दूसरी पंक्ति के अन्त में बार-बार आने वाले समान शब्द समूह को रदीफ (समान्त) कहते हैं। जैसे गजल का स्वरूप विश्लेषण

तूने लिक्खे मीन खंजन कमल से प्यारे नयन,

हमने देखे हैं हजारों दर्द के मारे नयन ।

चार पैसे चार दाने चार रोटी के लिए, दरदबन्दर दिन भर भटकते हैं ये बन्जारे नयन । इसमें 'नयन' रदीफ है। रदीफ अरबी भाष का शब्द है जिसका अर्थ होता है ऊँट या घोड़े पर पीछे बैठने वाला सहसवार। हिन्दी में इसे समान्त कहते हैं।

इसी प्रकार गजल के पहले शेर की दोनों पंक्तियों और बाद के प्रत्येक शेर की दूसरी पंक्ति में रदीफ से पहले आने वाला शब्द काफिया (तुकान्त) कहलाता है। पूर्वोक्त उदाहरण में प्यारे, बंजारे रदीफ से पहले हैं, इसलिए काफिया कहलायेंगे। काफिये का निर्वाह आवश्यक माना गया है, किन्तु आजकल काफिये में छूट लेने की परम्परा भी चल पड़ी है। उसका भी एक नियम होता है।

शेर गजल रूपी महल के ईट होते हैं। एक ही बहर के कई शेर मिलकर एक गजल का निर्माण करते हैं। 'शेर शब्द अरबी का है जिसका अर्थ होता है- जनाना जुल्फ या बाल। इसीलिए गजल को यदि सुन्दरी कहा जाता है तो शेर उसके गेसू कहलाते हैं। शेर की तुलना माशूक के चेहरे पर बनी दोनों भौहों से की जाती है। फारसी, उर्दू और हिन्दी के शब्द जब एक विशिष्ट छन्द-शास्त्र में बँधकर आते हैं, तो उन्हें शेर की संज्ञा रूदी जाती है।

गजलों की प्रधान विशेषता संक्षिप्तता होने के कारण उनमें दोहा छन्द की भाँति थोड़े में बहुत कुछ कहने अथवा गागर में सागर भरने की सामर्थ्य निहित होती है। अतः गजलों में अनुभूति की सम्प्रेषणीयता का महत्त्व असंदिग्ध है। वास्तव में यदि गजल को कवि की अनुभूतियों का विस्फोट कहें तो यह अतिशयोक्ति न होगी। गजलों में कवि अपना दुःख-दर्द, हर्ष उल्लास, ग्लानिदृक्षोभ, प्रायश्चित, उपालम्भ, देश-काल तथा परिस्थितियों के प्रति आत्म-दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। गजल के एक-एक मिसरे में कवि का अन्तर्जगत प्रतिबिम्बित होता है।

शेर दो पंक्तियों का होता है।

गजल के पहले शेर को 'मतला' (उदय) और --

गजल का स्वरूप विश्लेषण आखिरी शेर को 'मक्ता कहते हैं। गजल की रचना में 'बहर (छन्द) का एक निश्चित अनुशासन होता है। गजल के छन्दों में वर्ण, मात्रा, लय, गति, यति आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार किसी कवि द्वारा एक ही छंद के साँचे में प्रस्तुत किये गये हम काफिया और हम रदीफ शेरों के विशिष्ट संगठन को गजल कहते हैं। गजल में शेरों की संख्या कम से कम तीन और अधिक से अधिक पच्चीस मानी गयी है, किन्तु अब इस तरह का कोई बन्धन नहीं है। अब काफी लम्बी गजलें भी लिखी जा रही हैं।

उपसंहार

अब तक के अध्ययन में हमने ये देखा कि गजल अरबी और फारसी से होती हुई उर्दू से पहले हिन्दी में आई और अमीर खुसरो ने फारसी, हिन्दी और लोक भाषाओं के मिले-जुले प्रयोग से गजल को एक नया रूप प्रदान किया। अमीर खुसरो के बाद कबीर दास, प्यारे लाल शोकी और गिरिधरदास से

www.ignited.in

होती हुई गजल आधुनिक काव्य तक पहुँची। हिन्दी में भक्ति साहित्य के कवियों द्वारा गीत, चैपाई, दोहा और पदों जैसे छन्दों को अपनाये जाने के कारण गजल जैसे काव्य रूप पर उनका ध्यान नहीं गया। रीति कालीन कवियों ने दोहा, सवैया, धनाक्षरी आदि छन्दों में रचनाएँ की। द्य हिन्दी साहित्य में गजल के अध्येताओं ने मीराबाई के कुछ पदों एवं केशवदास की रामचन्द्रिका में गजल के छन्दशास्त्र की लय लक्षित की है, किन्तु गजल का व्यवस्थित लेखन भारतेन्दु युग में ही मिलता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'रस, प्रताप नरायण मिश्र, बद्री नारायण चैधरी 'प्रेमघन आदि ने इस युग में अच्छी गजलें लिखी हैं।

भारतेन्दु जी का एक शेर है ।

हिला देंगे अभी ऐ संगे दिल तेरे कलेजे को

हमारी आतिशेबारी से पत्थर भी पिघलते हैं।

द्विवेदी युगीन कवियों में श्रीधर पाठक मैथिलीशरण गुप्त केशव प्रसाद मिश्र, मन्नन द्विवेदी सत्यनरायण कवि रत्न बदरीनाथ भट्ट, ठाकुर गोपाल शरण सिंह, राय देवी प्रसाद पूर्ण राम नरेश त्रिपाठी लाला भगवानदीन इत्यादि ने गजलें लिखीं। इन कवियों ने उर्दू लयाधारों और हिन्दी छन्दों को भी अपनाया। यहाँ गजल की अन्तर्वस्तु मुख्य रूप से भक्ति और देशप्रेम है।

एक उदाहरण देखें

मैं हूँढता तुझे था जब कुंज और वन ने

तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में। -राम नरेश त्रिपाठी

छायावाद के कवियों में मुख्य रूप से जयशंकर प्रसाद और सूर्यकान्त त्रिपाठी श्निरालाश् ने गजलें लिखी। प्रसाद के कविता-संग्रहों एवं नाटकों में उनकी गजलें संकलित हैं। उनकी गजलों में गजल के नियमों का बखूबी निर्वाह हुआ है।

छायावादी कवियों में निराला ऐसे महत्वपूर्ण रचनाकार हैं जिन्होंने सामाजिक विन्दूपताओं असमानताओं और शोषण को विषय बनाकर अनेक खूबसूरत गजलें लिखी उपसंहार जो 'बेला में संकलित है। बेला के आवेदन में उन्होंने लिखा है कि सबसे बढ़कर नई बात यह है कि अलग-अलग बहरों की गजलें भी हैं जिनमें फारसी के छन्दशास्त्र का निर्वाह किया गया है। निराला की गजलों की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी जनपक्षधरता राजनीतिक समझ और व्यंग्य की तीखी मार

भेद खुल-खुल जाय वो सूरत हमारे दिल में है।

देश को मिल जाय जो पूँजी तुम्हारी मिल में है।

छायावादोत्तर हिन्दी गजल के विकास में दुष्यन्त कुमार से पूर्व जिन रचनाकारों ने विशेष भूमिका निभाई है उनमें जानकी बल्लभशास्त्री, बलवीर सिंह रंग हंसराज रहबर शमशेर बहादुर सिंह त्रिलोचन शास्त्री रामावतार त्यागी और नीरज के नाम उल्लेखनीय है।

गजल को लोकप्रियता प्रदान करने में जानकी बल्लभशास्त्री ने काफी रचनात्मक भूमिका अदा की है। रचनाओं के साथ ही इनका स्वर भी बहुत अच्छा था। यही कारण था कि निराला जी भी मंचों पर अपनी गजलों का इन्हीं से पाठ कराया करते थे। इनकी गजलों का तेवर रूमानी है

जिन्होंने हो तुम्हें देखा नयन वे और होते हैं।

कि बनते वन्दना के छन्द क्षण वे और होते हैं।

बलवीर सिंह रंग मूलतः रोमानी भावधारा के सशक्त गीतकार एवं गजलकार रहे हैं। उनकी गजलों में परम्परागत गजलों की सारी विशेषताएं लक्षित की जा सकती हैं। हिन्दी के तत्सम शब्दों का प्रयोग और छन्दों का निर्वाह उनकी अपनी खासियत है ।

जब न कुछ दे सका प्रेम-पीयूष तो

अब उपेक्षा भरा विष निगल जाइये।

व्यर्थ सारा मनस्ताप मेरा गया

कोई पत्थर न कर दे पिघल जाइये।

नई कविता के प्रतिष्ठित कवि शमशेर बहादुर सिंह ने काफी अच्छी गजलें भी लिखी हैं। देखा जाय तो कविलाओं की तुलना में इनकी गजलें अधिक लोकप्रिय हैं। इनकी गजलों में नाजुक ख्याली भी हैं, मर्मस्पर्शिनी क्षमता भी और चट्टानी साहस भी । इनकी गजलें 'कुछ और कविताएँ में संकलित हैं। भाषा, लोच और अभिव्यक्ति की सादगी इनकी विशेषता है

यूँही राह चलते में मिल लेने वाले

बड़े आये हैं मेरा दिल लेने वाले।

श्री त्रिलोचन शास्त्री की गजलें 'गुलाब और बुलबुल में संकलित है। त्रिलोचन जी ने प्रेम और क्रांति दोनों भावनाओं की गजलें लिखीं हैं। इनकी दृष्टि में प्रेम, क्रान्ति का विरोधी न होकर उसका पूरक और प्रेरक हे। जनोन्मुखता और आम

www.ignited.in

आदमी की विभिन्न दशाओं का वर्णन इनकी गजलों का केन्द्रीय कथ्य है।

श्री रामावतार त्यागी यद्यपि मूलतः गीतकार थे लेकिन गुजलों के विकास में भी इन्होंने महत्वपूर्ण काम किया है। इनकी गजलों का मूलस्वरूप यथास्थिति विरोधी और क्रान्तिकारी है।

बन न जाये ये शहर की जिन्दगी जैसी कहीं

जोर से पत्थर उछालो झील को सोने न दो।

महत्वपूर्ण गीतकार श्री गोपालदास श्नीरज की गजलें भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। नीरज की गजलें उर्दू की बहरों के बजाय हिन्दी के मात्रिक छन्दों को आधार बनाकर लिखी गयी हैं। इसीलिए इन्होंने अपनी गजलों को श्गीतिका नाम दिया है। इन्होंने प्रेम और सामाजिक यथार्थ दोनों को अपनी गजलों का विषय बनाया है ।

जब कभी जिक्र छिड़ा उनकी गली में मेरा

जाने शर्माये क्यों वो गाँव की दुल्हन की तरह।

इस बीसवीं सदी के सातवें दशक में हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन और विकास हुआ, जब नई कविता के अत्यन्त समर्थ और प्रतिष्ठित कवि दुष्यन्त कुमार गजल विद्या की तरफ उन्मुख हुए। दुष्यन्त कुमार के साथ ही उनके अनेक समकालीन रचनाकारों ने भी गजल को अपनी मुख्य विद्या के रूप में अपनाया। यह कोई मामूली बात नहीं, एक युगान्तकारी घटना थी जिसके कारणों की तलाश आवश्यक है।

वस्तुतः तार सप्तक (2015) के साथ आरम्भ होने वाली और दूसरा सप्तक (2016) के साथ प्रतिष्ठित होने वाली नई कविताश् एक लम्बे समय तक काव्य की केन्द्रीय विद्या रही है किन्तु अपनी सपाटबयानी, गद्यात्मकता, अरोचकता और प्रभावहीनता के कारण वह लगातार अपना पाठकीय आधार खोती गई है।

इन्हीं स्थितियों में नई कविता के छद्मों से ऊबकर दुष्यन्त कुमार ने लिखा था मैं बराबर महसूसे करता हूँ कि कविता में आधुनिकता का छद्म कविता को बराबर पाठकों से दूर करता चला गया है। कविता और पाठकों के बीच इतना फासला कभी न था, जितना आज है। इससे भी ज्यादा दुखद बात यह है कि कविता शनैः शनैः अपनी पहचान और कवि अपनी शख्सियत खोता चला गया है। ऐसा लगता है कि दो दर्जन कवि एक ही शैली और शब्दावली में एक ही कविता लिख रहे हैं और इस कविता के बारे में कहा जाता है कि यह सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति की भूमिका तैयार कर रही है। मेरी समझ में यह दलील खोटी और वक्तव्य भ्रामक है। जो कविता लोगों तक पहुँचती ही नहीं, वह किसी क्रान्ति की संवाहिका भला कैसे हो सकती हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. अब होगी बरसात नरेन्द्र कुमार जनसंस्कृति मंच प्रकाशन, 5 खुसरोबाग रोड इलाहाबाद।
2. अमीर खुसरो और उनकी हिन्दी रचनाएँ, डॉ0 भोलानाथ तिवारी 2016. ।
3. असनाफे अदब का मर्तबा सैय्यद सफी मुर्तजा निजामी प्रेस लखनऊ ।
4. आस बशीरबद्र वाणी प्रकाशनद्द4697 ध्5, 21 द्दए, दरियागंज, नई दिल्ली प्र0सं0
5. आस्था के अमलतास, चन्द्रसेन विराट, इन्द्रप्रस्त प्र0 दिल्ली- 51, 2015
6. आग का राग माधव मधुकर, वैभव प्रकाशन, मोहन पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली 9 , प्र0 सं0 2016
7. आधुनिक कविता में उर्दू, के तत्व, डॉ0 नरेश राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2016.
8. आधुनिकता और सृजनात्मक साहित्य, इन्द्रनाथ मदान, राधाकृष्ण प्र नई दिल्ली,
9. आइना दरका हुआ, नचिकेता, 0/50, डाक्टर्स कालोनी कंकड बाग पटना द्वारा प्रकाशित इन्दुकला खण्ड-1 किरण- 5 सं0 जयशंकर प्रसाद
10. उर्दू जबान का संक्षिप्त इतिहास, रामनरेश त्रिपाठी, 2016, हिन्दी मंदिर, प्रयाग
11. उर्दू भाषा का संक्षिप्त इतिहास, रधुपति सहाय फिराक, हिन्दी संस्थान, लखनऊ
12. उर्दू साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, प्रो0 एजाज हुसेन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017
13. उर्दू सायरी पर एक नजर प्रो0 कलीमुद्दीन अहमद
14. उर्दू-हिन्दी कोश सं0 मुहम्मद मुस्तफा खॉ मद्दाह

www.ignited.in

15. एक पत्थर झील में अनिल गहलौत श्री शिवशक्ति प्र0, अग्रसेन नगर कोसीकलांमथुरा

16. ऐ परिन्दो परों में रहो मधुर नज्मी काव्यमुखी-साहित्य अकादमी हफीज कालोनी आदर्श नगर, गोहना- मुहम्मदाबाद, प्र0 सं0 2017

17. कभी कुछ याद आता है शंकर प्रसाद करगेती सम्वेदना प्रकाशन एफ- 23 नई कालोनी, कासिमपुर (पा0 हा0) अलीगढ़.

Corresponding Author

Bhuvnesh Kumar Parihar*

Assistant Acharya (Hindi), Government College, Sambhalek, Jaipur